तित्थयर

जैन भवन

वर्ष : २४ अंक : ४
जुलाई २०००

6103

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २४ | अंक - ४, जुलाई | २०००

॥ जैन भवन ॥

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये पता - Editor : **Tithayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें –
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख		लेखक	पृ. सं
१.	श्रमण भगवान महावीर	-	लता बोथरा	१४७
२.	सराक जाति का संक्षिप्त इतिहास	-	श्री अमरेन्द्र कुमार सराक	१५४
३.	मलयासुन्दरी	-		१६८

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :

Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

श्रमण भगवान महावीर

पूर्वानुवृत्ति

इन्द्रभूति को वेदो के शब्दो का परिचय था परन्तु अर्थ का बोध नही होने के कारण परस्पर विरोधी वाक्यों से संशय में पड़ गये और संशय का कारण था अनेकान्त दृष्टि का अभाव। प्रभु के मुख से वेद वाक्य का अपूर्व समन्वय सुन गौतम का अज्ञानान्धकार दूर हो जाता है और प्रभु का प्रवचन सुन उन्होंने श्रमण धर्म ग्रहण कर लिया। इसी प्रकार सोमिल की यज्ञशाला में १० और प्रकाण्ड पंडित आये हुए थे जिनमें दो अग्नि भूति और वायुभूति इन्द्रभूति गौतम के भाई थे। अन्य के नाम- भारद्वाज, सुधर्मा, मण्डित, मौर्यपुत्र, अचलभ्राता, मेतार्य और प्रभास। इन सभी के मन में धर्म के विषय में सिद्धान्तिक शंकाएँ थी। प्रभु ने प्रत्येक को सम्बोधन करते हुए उनकी शंकाओं का समाधान किया। सब ने अपने -अपने शिष्यों के साथ श्रमण धर्म अंगीकार किया।

भगवान ने एक ही दिन में ४४११ ब्राह्मणों को प्रव्रज्या दी जिनमें प्रमुख ११ विद्वानों को गणधर बनाया। इन्द्रभूति गौतम प्रथम गणधर बने। अनेक नर नारियाँ भी प्रभु के दिव्य उपदेश से प्रभावित हो श्रावक और श्राविका बने। इस प्रकार चतुर्विध संघ रुपी तीर्थ की प्रतिष्ठा कर वर्द्धमान महावीर इस अवसर्पिणी काल के अन्तिम २४वें तीर्थंकर हुए।

महासेण उद्यान से प्रभु राजगृह के गुणशील चैत्य में आते है। उनके आगमन का समाचार सुन महाराज श्रेणिक, राजमहिषी चेल्लना एवं समस्त प्रजाजन प्रभु का प्रवचन सुनने आते है। प्रभु मुनि धर्म और श्रावक धर्म का उपदेश देकर अपने संघ के दोनों अंगों श्रावक और श्रमणों को एक सूत्र में समन्वित कर अपने कुशल संगठन का परिचय देते है। प्रभु का प्रवचन सुन अनेक लोग उनके संघ में सम्मिलित हो गये। तीर्थंकर जीवन का प्रथम चातुर्मास (वर्षाकाल) भगवान राजगृह में ही व्यतीत करते हैं। राजा श्रेणिक भगवान के तप त्याग से मुग्ध हो भगवान

से प्रश्न करते है कि **"भगवान युवा थे आप राज वैभव था फिर आप त्यागी क्यों बने । इस वयस में प्रत्येक आनन्द भोगता है फिर आपने यह कष्ट, त्याग का मार्ग क्यों अपनाया।" महावीर ने उत्तर दिया-'श्रेणिक लोक की यही तो भूल है कि वह भोगों में इन्द्रिय वासनाओं की तृप्ति में आनन्द मानता है उसका अन्त उसे नही मिलता लोक के सारे उपद्रव इसी भूल से होते हैं। सुख भोग में नहीं त्याग में है। संसार में आसक्त प्राणी सुख को नहीं पा सकता है क्यों कि वह वासनाओं का दास होता है। दासता में आनन्द कहाँ। इसलिये हे श्रेणिक! आत्म स्वतन्त्रता ही मूल सुख है।"**

राजकुमार मेघकुमार और नन्दी सेन के मन में भी वैराग्य प्रस्फुटित हुआ और उन्होंने प्रव्रज्या ग्रहण की।

मेघ कुमार दीक्षा में सबसे छोटे होने के कारण उनका संथारा सबसे पीछे था। रात को जो भी श्रमण उठते उनके पादस्पृष्ट होने से उनकी नींद टूट जाती। अतः दुःखी हो उन्होंने मुनिधर्म त्यागने का संकल्प कर प्रातः भगवान के पास जाते हैं। भगवान उनके मनोभाव से अवगत थे तथा उन्होंने मेघ कुमार को प्रतिबोध देकर पूर्व भव का ज्ञान कराया। किस प्रकार जंगल में आग लगने पर जब सब जानवर अपने रक्षार्थ भाग रहे थे तब हाथी के रूप में एक अल्पप्राण खरगोश की रक्षा के लिए तीन पाँव में खड़े रहे। जब अग्नि बुझ गयी और खरगोश चला गया तब धरती पर पाँव रखना चाहा लेकिन पांव शून्य हो जाने के कारण गिर पड़े। पूर्व भव जान कर मेघ कुमार की चेतना जागृत होती है पशुजीवन में एक निरीह प्राणी की रक्षा के लिए कितना धैर्य का परिचय दिया और यहां इतना अधैर्य क्यों। वे पुनः मुनि धर्म में अवस्थित हो जाते है।

वत्स की राजधानी कौशम्बी के बाहर चन्द्रावतरणचैत्य में भगवान का उपदेश सुनने आयी श्रमणोपासिका जयन्ती के प्रश्नों का उत्तर देते हुए भगवान कहते है:-

सत्य एक रूपी नहीं है, बहुरूपी है, विभिन्न दृष्टिकोणों से जाँचने पर ही सत्य का साक्षात्कार हो सकता है। जैसे किसी का सोना अच्छा

है तो किसी का जागना। जो अधार्मिक है, अधर्म आचरण करते हैं, अधर्म ही जिन्हें प्रिय है उनका सोना अच्छा है, वे यदि सोये रहेंगे तो दुःख शोक का कारण नहीं बनेगें। दूसरी और जो धार्मिक है धर्म का आचरण करते है, धर्म जिन्हें प्रिय है उनका जागना अच्छा है क्योंकि वे स्वयं का भी भला करेंगे और दूसरों को भी धर्म पथ पर प्रवृत करेंगे। अतः किसी ना किसी रूप में सोना भी अच्छा है और जागना भी। यही है वर्द्धमान का अनेकान्त दर्शन, विभिन्न मतमतान्तरों के मध्य एक मात्र समन्वय सूत्र, महावीर का अवदान, सर्वधर्म समन्वय की प्रथम उद्घोषणा, विश्व की सभी समस्याओं का निदान। इसीलिये सिद्धसेन दिवाकर ने कहा - 'हे भगवान जिस प्रकार समुद्र में सभी नदियां विलीन हो जाती है उसी प्रकार सभी दार्शनिक भव आपके सिद्धान्त में समाविष्ट है।

वर्द्धमान धर्म प्रचार के साथ-साथ चाहते थे समाज संस्कार भी। उनका लक्ष्य था सर्वोदय और सर्वोदय के लिये साम्य। सब मनुष्य समान है। परिग्रह परिमाण संचय की सीमा का निर्धारण करना राष्ट्र के निर्देश और दण्ड के भय से नहीं वरन् स्वेच्छा से व्रत ग्रहण कर। गृहपति आनन्द जिसकी ४ करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ जमीन में गड़ी रहती थी, ४ करोड़ ब्याज में लगी रहती थी और ४ करोड़ सम्पत्ति के रूप में। उनके ४ गोव्रज थे जिनमें से प्रत्येक में १०,००० गायें थी। उन्होंने भगवान का प्रवचन सुन कर, श्रावक के पाँच अणुव्रत ३ गुणव्रतों और चार शिक्षाव्रतों को ग्रहण किया। व्रत ग्रहण के फलस्वरुप निर्दिष्ट परिमाण के अतिरिक्त जितना भी धन अर्जित किया जाता है उसे समाज कल्याण के लिए व्यय कर देना होता है क्यों कि उसे अब वह नहीं भोग सकते हैं या संग्रह कर रख सकते है। इस प्रकार श्रावक के १२ व्रतों के पालन का उद्देश्य लोक कल्याण के लिये और सही मायनों में गणतन्त्र की सफलता के लिये परम आवश्यक है। यही है महावीर का अपरिग्रह दर्शन।

महावीर के चतुर्विध संघ में १४००० साधु ३६००० साध्वियाँ १ लाख उनसठहजार श्रावक और ३ लाख १८ हजार श्राविकाएँ थीं। उनके संघ में गौतम स्वामी का जो स्थान था वही साध्वी शिरोमणि चन्दनवाला

का था। भगवान ने स्त्री और पुरुष के बीच असमानता को दूर कर स्त्री मुक्ति का उद्‌घोष किया। महावीर ने सिद्ध किया कि शारीरिक भिन्नता होने पर भी आत्मिक दृष्टि से स्त्री और पुरुष में कोई भेद नहीं है। साधना के क्षेत्र में दोनों समान है उनके संघ में हर स्त्री महारानी हो या दासी,नीचकुल की हो या उच्चकुल की, घर से प्रताड़ित हो या समाज द्वारा ठुकराई हर कोई शामिल हो सकती थी। भगवान ने स्त्री की सामाजिक स्थिति की उन्नति के लिये रुढ़िग्रस्त मान्यताओं को तोड़ कर उसे पुरुष के समानाधिकारी बनाया। उन्होंने वर्ग भेद, वर्ण भेद, जाति भेद की दीवारें तोड़ दी। अनेक प्राणियों की हत्या करने वाले अर्जुन माली तथा चांडाल कुलोत्पन्न हरिकेशी को अपने संघ में दीक्षित किया, **उन्होंने कहा "सिरमुंडाने से कोई श्रमण नही होता, ऊँकार के जाप से कोई ब्राह्मण नहीं होता, निर्जन वन में रहने से कोई मुनि नहीं होता और कुश का चीवर धारण करने से कोई तापस नही होता। समता से श्रमण होता है, ब्रह्मचर्य से ब्राह्मण होता है, ज्ञान से मुनि होता है, और तप से तापस होता है।"** भगवान महावीर की यह अध्यात्म क्रान्ति थी, अन्तः क्रान्ति थी, समाज क्रान्ति थी।

भगवान महावीर के दर्शन के प्रभाव का विस्तार सिर्फ भारत में ही नहीं अन्य देशों में भी था।

ऐर्द्र नगर (बेबी लोन) के राजकुमार आर्द्रक जब वर्धमान के पास जा रहे थे तो रास्ते में वन में पकड़ा हुआ एक हाथी लोहे की श्रृंखला तोड़ कर उनकी ओर दौड़ता हुआ आया और उन्हें मस्तक झुका प्रणाम कर वन में चला गया। लोग आश्चर्य चकित रह गये कि आर्द्रक कुमार नें हाथी को कैसे वश में कर लिया। श्रेणिक राजा के पूछने पर आर्द्रक कुमार ने कहा कि आपके पुत्र अभय कुमार ने मेरे को ऋषभदेव की एक छोटी स्वर्ण प्रतिमा उपहार स्वरूप भेजी जिसको देखने से मुझे जाति स्मरण ज्ञान हुआ और मैने भारत वर्ष आकर प्रभु से श्रमण दीक्षा ली। एक दिन प्रवचन करते हुए एक श्रेष्ठी कन्या ने खेल ही खेल में मुझे वरण कर लिया। जब कन्या बड़ी हुई तो पिता द्वारा उसके विवाह करने के

लिए उद्योग करने पर उसने बताया कि उसने एक श्रमण को वरण कर लिया है और पिता द्वारा एक अतिथिशाला तैयार करा वहाँ नित्य वह मेरी प्रतीक्षा करने लगी। एक दिन उस अतिथि शाला में मुझे देख कर मेरे पाँव धोते समय पद्मचिन्ह देख कर वह मुझे पहिचान गयी। पूर्व जन्म में भी वहीं मेरी पत्नी थी अतः उसकी आसक्ति से मैं श्रमण धर्म परित्याग कर गृहस्थ धर्म निभाने लगा। १२ वर्ष बाद जब संसार परित्याग करने चला तो मेरे पुत्र ने काता हुआ सूत मेरे पाँवों में बांध दिया। उसके नन्हें-नन्हें हांथो के स्पर्श ने पुनः मोह ग्रस्त कर दिया। आज उन्हीं कच्चे सूत के बंधनों को तोड़ कर आते देख जंगली हाथी भी अपनी लोह ऋंखला को तोड़ कर अरण्य की असीम मुक्ति में लौट गया। आर्द्रक भी महावीर के पास चले गये।

कोटिवर्ष के राजा किरातराज वर्णिक जिनदेव के साथ मूल्यवान रत्नों की खोज में साकेत में आते है जहाँ भगवान का प्रवचन हो रहा है। वहां भगवान का प्रवचन सुनने जाते हैं। **भगवान कह रहे हैं संसार में रत्न दो प्रकार के होते हैं द्रव्य रत्न और भाव रत्न। हीरा, माणिक , मणि आदि द्रव्य रत्न हैं और सम्यक् दर्शन, सम्यक ज्ञान, और सम्यक् चारित्र अर्थात् तत्व श्रद्धा, तत्व का ज्ञान और उसके अनुकूल आचरण भाव रत्न हैं। द्रव्य रत्न कितने ही बहुमूल्य क्यों न हो उनका प्रभाव इसी भव तक सीमित है लेकिन भावरत्न का प्रभाव असीम है, भव भवान्तर में भी फल देता है।**

किरात राज भगवान का प्रवचन सुन भगवान से भाव रत्न देने का आग्रह करते है और अपने धन, रत्न, राज्य, ऐश्वर्य का त्याग कर प्रव्रज्या लेते हैं।

केवलज्ञान के बाद ३० वर्षों में भगवान ने मगध सम्राट श्रेणिक उनके पुत्र कोणिक, वैशाली के गणपति चेटक, काशी के नौ मल्ल जाति के राजाओं, कौशल के नौ लिच्छिवी राजाओं, उज्जैन के चण्डप्रद्योत, प्रतिष्ठानपुर के अप्रतिहत, कनकपुर के प्रियचन्द्र, साकेतपुर के मित्रानन्दी, पृष्ठ चंपा के शाल और महाशाल, क्षत्रियकुंड के नंदीवर्धन, आमकल्पा के श्वेतराजा , ऋषभपुर के धनावह, चंपानगरी के दत्त राजा, वीतिभय के उदायन, कौशम्बी के शतनिक आदि अनेक राजाओं, अभयकुमार, मेघकुमार,

आर्दक कुमार नन्दी सेन आदि राजकुमारों, चन्दनवाला, मृगावती चेल्लणा आदि रानियों, शालिभद्र, धन्नादि, आनन्द आदि गृहस्थों, इन्द्रभूति आदि प्रकाण्ड ब्राह्मण विद्वानों को प्रतिबोधित किया और श्रमण प्रव्रज्या दी।

भगवान अपना निर्वाण समय निकट जानकर ब्यालिसवां चातुर्मास पावा नगरी के हस्तीपाल राजा के सभा धर्म गृह में व्यतीत करते हैं। श्रावक, भाद्र, आश्विन मास बीत गया कार्तिक मास का कृष्ण पक्ष भी बीतने आया और आया उनकी जीवन यात्रा का आखिरी दिन तथा अन्तिम अखण्ड धारावाही प्रवचन प्रारम्भ हुआ।

'आत्मा द्रव्य रूप में एक है, ज्ञान दर्शन रूप में दो है, आत्म प्रदेश की अपेक्षा से अक्षय है, अव्यय और सत्त है परन्तु पर्याय की दृष्टि से भूत वर्तमान भविष्य में विभिन्न रूपधारी है। अपनी आत्मा के द्वारा सत्य की खोज करों। अहिंसा के गर्भ में सत्य की सत्ता है। सत्य कहना तथा स्वयं में सत्य को आत्मसात् करना साहस का काम है। सत्य वचन बोलने वाला क्षमावान, दृढ़ संकल्पी, निर्भीक, आत्मविश्वासी बनता है। ईश्वर नाम की कोई आलोकिक सत्ता आस्तित्व में नहीं हैं ना ही कोई ऐसा स्थान है। यह विश्व अनादि अनन्त है। मोंक्ष एक ऐसा सर्वोच्चपद है जिसे आत्म आराधना द्वारा कोई भी प्राप्त कर सकता है।

ब्रह्मचर्य अन्तर्मुखी विकास का सर्वोच्च मार्ग है। आत्मा जब साधना के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचती है तब वो ना स्त्री है ना पुरुष चारित्र के इसी रूप को ब्रह्मचर्य कहते हैं। कामनाओं का अन्त करना ही दु:खों का अन्त करना हैं। क्यों कि परिग्रह या संग्रह समाजिक हिंसा है।

यथार्थवाद उनके व्यक्तित्व का मापदण्ड था जिसके उज्जवल आलोक में उन्होंने अहिंसा के परम धर्म को पूर्णता तक पहुंचाया। उनकी देशना का सर्वोपरि तत्व अहिंसा है। **उन्होंने कहा-जिसे तुम मारना चाहते हो वो तुम्हीं हो सभी प्राणी जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता, सबको जीवन प्रिय है।** महावीर ने जीवन व्यापी अहिंसा का स्त्रोत बहाया, जीवन को पवित्र बनाने के लिये अहिंसा एक गंगा है जिसको अवगाहन करने से ही मानवता का पूर्ण विकास हो सकता है। विश्व में प्रेम, अभय, विश्वास के लिये महावीर ने 'जीयो और जीने दो' का उद्घोष किया।

'परस्परोप ग्रहों जीवानाम' सभी जीव एक दूसरे के सहायक हैं अतः किसी को मारोमत, दुःख मत पहुँचाओं। अपनी भावना में भी किसी के प्रति बुरा मत सोचो क्योंकि भाव हिंसा भी हिंसा है व कर्म बन्ध का कारण। चेतना के धरातल पर सभी प्राणी समूह चाहे वो एकेन्द्रिय हो या पंचेन्द्रिय एक समान है। प्रत्येक की स्वतन्त्र सत्ता है। भगवान का शासन सर्वोदय की प्रेरणा भूमि है। राजतन्त्र में प्रजा की उपेक्षा है, गणतन्त्र में अल्पमत की उपेक्षा है परन्तु महावीर के शासन में एकेन्द्रिय जैसें अविकसित जीव भी सुरक्षित हैं' कोई भी आत्मस्वतन्त्रता से वंचित नहीं। उनके उपदेशों का प्रवाह जाति वर्ग तथा वर्ण की सीमाओं को पार कर आगे बढ़ा। उनके उपदेश सभी के लिये समान मूल्य रखते थे। वे किसी सम्प्रदाय जाति तथा वर्ग को जन्म नहीं देकर (मिति में सव्व भूएसू वैंर मज्झं न केणई (मेरी सभी से मैत्री है किसी से मेरा विरोध नहीं) का उद्घोष करते हैं। महात्मा गांधी ने भी उन्हीं के दिखाये अहिंसा के मार्ग को अपना कर भारत को आजादी दिलायी थी। भारतीय लोकतन्त्र के बुनियादी तत्वों अनाक्रमण, सहआस्तित्व, समता और संयम की आधारशिला महावीर के मौलिक और व्यवहारिक सिद्धान्त ही हैं जिन्होंने प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था को एक नयी दिशा दी है।

क्रमशः

सरांक जाति का संक्षिप्त इतिहास

श्री अमरेन्द्र कुमार सराक

सराक शब्द की उत्पत्ति

Mr. G Coup Land I. C. S. ने अपने निम्नलिखित लेख जिसे gazetter of Manbhum में प्रकाशित किया था उससे भी उपरोक्त बात की पुष्टि होती है।

"The word Sarak is doultless derived from Sravaka, The Sanskrit word hearer. Amongest the Jain, the term is used to indicate the lay-men or persons. Who engaged in secular persuits, as distinguished from the Yatis, monks or ascetics."

एक दूसरे लेख में भी करीब - करीब Mr. L. S. S. O Mally. I. C. S. के द्वारा ऐसा ही लिखा गया है जो निम्नलिखित उक्ति से पता चलता है:-

"The name Sarawak, Serak or Sarak is clearly a Corruption of Srawaka the Sanskrit word for a hearer, Which was used by the Jains for lay brethern," [From Bengal District gezetter Vol. XX Singbhum etc. Calcutta 1910 Pg25]

ऊपरलिखित बातों से यह साफ जाहिर होता है कि सराकों के पूर्वज ऋषभदेव भगवान द्वारा चलाये गये श्रावक धर्म को मानने वाले श्रावक थे।जब सराकों के पूर्वजों का छोटानागपुर में आगमन हुआ तब यहाँ के आदिवासियों के अन्दर उच्चारण का अन्तर होने के कारण क्रमशः श्रावक से सरोवक, श्राक तथा सराक में परिणत हो गया। उच्चारण में फर्क आने के कारण श्रावक शब्द तो सराक में परिणित हो गया मगर आदि काल से लेकर आज तक सराकों के आचार, आचरण सभ्यता - संस्कृति में जैन धर्म या श्रावक धर्म का छाप अभी तक नही मिटा है। जैसे हजारों हिंस मांसाहारी वन्य पशुओं के बीच रहते हुये भी हिरण अपने को तृण भोजी बनाकर रखता है। उसी प्रकार आज लगभग अढ़ाई तीन हजार वर्ष से छोटा नागपुर के जंगल में मांसाहारी पड़ोसियों

के बीच रहते हुये भी श्रावक धर्म या जैन धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा तथा भक्ति रहने के कारण यह सराक जाति आज तक अपनी सभ्यता, संस्कृति से स्खलित नही हुई है। इसी के कारण वर्तमान काल में जैन भाई गण अपने प्राचीन स्वधर्मी बन्धुओं को पहचानने में समर्थ हुये तथा इनके सामाजिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिये अग्रसर हुये। अब भविष्य ही बताएगा कि इस जाति के उत्थान में जैन समाज कितना सफल होता है।

छोटानागपुर क्षेत्र में विभिन्न स्थान से प्राप्त जैन मंदिरों तथा मूर्तियों के अवशेषों से जैन बंधुओं का भी यह पूर्ण विश्वास हुआ है कि सराकों के पूर्वजों ने ही इन मंदिरो का निर्माण किया था जिसे विरोधी मतावलम्बियों द्वारा नष्ट कर दिया गया है। सराक लोग इस बात से भी परिचित है कि हमारे पूर्वज ऋषभदेव भगवान के समय से ही हम जैन धर्म का पालन करते आ रहे है इसीलिये एक सराक वक्ता ने एक जैन सम्मेलन में कहा था कि - "यदि वर्तमान जैन संघ जिनेश्वर की नूतन प्रतिमा है, तो सराक उसकी प्राचीन प्रतिमा का अवशेष हैं। यदि जैन रूप पर्वत की खुदाई करेंगे तो सराक उस खुदाई की उपलब्धि होगें"। कहने का तात्पर्य यही है कि निःसन्देह श्रावक शब्द से ही सराक शब्द की उत्पत्ति हुई है। मगर १६०० शताब्दी के पश्चात ये लोग जैन धर्म तथा हिन्दू धर्म के बीच वाला रास्ता अपना कर अपने को स्थानीय हिन्दुओं के कोप से बचने का उपाय करने के कारण जैन धर्म से क्रमशः विछुड़ते गये। इस जाति को आज अपने पूर्वजो का सही इतिहास का पता लगाने की जरूरत है। समय - समय पर इस जाति को स्थानीय लोगों का अत्याचार झेलना पड़ा है तथा उस अत्याचार से अपनी धन सम्पत्ति या इतिहास, धर्म ग्रन्थ आदि कुछ भी बचा नहीं पाये। उसी के कारण आज श्रुति अवशेष, आदि विभिन्न उपाय से संग्रहित तथ्यों के आधार पर इस जाति का एक इतिहास तैयार करना अत्यावश्यक हो गया है। इस जाति का उत्थान तभी होगा जब अपने पूर्वजो के गौरवपूर्ण प्राचीन इतिहास से परिचित होगें। आज यह जाति ध्वंस के कगार पर खड़ी है।

सराक जाति का आदि पुरुष

आज से करीब ७/८ हजार वर्ष पहले भारत के पश्चिमांचल में सिन्धु नदी के किनारे एक उच्चस्तर की सभ्यता का विकास हुआ था जिसका पता हमें हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो की खुदाई से चलता है। ये दोनों जगह क्रमशः सिन्धु के लरकाना जिले और पंजाब के मन्टोगोमरी जिले में अवस्थित है। प्राकृतिक दुर्योग या युद्ध - विग्रह किसी कारणवश इस सभ्यता का ध्वंस हो गया और आर्य सभ्यता के नाम से एक नयी सभ्यता का विकास हुआ । कुछ इतिहासकारों का मानना है कि आर्य लोगों का आगमन बाहर से हुआ था, दूसरी तरफ कुछ लोगों का कहना है कि ये लोग भारत के ही रहने वाले थे। जो कुछ भी हो सिन्धु सभ्यता के पतन के पश्चात् एक नयी सभ्यता का विकास हुआ जो आर्य सभ्यता कहलायी। आर्य सभ्यता के युग को या काल को दो भागों में बांटा गया है :-

(१) पूर्व वैदिक काल (२) उत्तर वैदिक काल। इस लिये इस सभ्यता को वैदिक सभ्यता भी कहा जाता है।

शास्त्र तथा इतिहास दोनों के अनुसार सराकों के पूर्वज श्रावक जाति या श्रावक धर्मावलम्बियों को ही माना जाता है जो आदि संस्कृति के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के वंशज या अनुयायी थे। ये लोग आर्य गोष्ठी के ही थे। श्रावक धर्म या जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान ऋषभदेव की चर्चा आर्य साहित्यों में भी की गयी है। आर्य साहित्य का श्रीमद्भागवत के पांचवें स्कन्ध के चौथे पांचवें तथा छट्ठे अध्याय में भगवान ऋषभदेव का ईश्वरत्व तथा उनके अलौकिक योगैश्वर्य का वर्णन किया गया है एवं उन्हें ब्रह्मा से भी श्रेष्ठ कहा गया है। (५ -२०-२७)। इससे यह भी साबित होता है कि दूसरी आर्य गोष्ठियां भी भगवान ऋषभदेव को ईश्वर के रूप में ग्रहण करती हैं। श्रावकों या सराकों के इस आदि पुरुष को ही आर्य संस्कृति का प्रणेता माने जाने का प्रमाण जैन तथा हिन्दू शास्त्रों में पाया जाता है। श्रीमद्भागवत का यह कहना है कि धर्म के संस्थापन के लिये भगवान ऋषभदेव अवतार हुये थे इनको विष्णु का अवतार भी कहा गया है। श्रीमद्भागवत में ऋषभदेव के पुत्र भरत, ऋषभदेव के पिता नाभि, नाभि के पिता आग्निध्र तथा आग्निध्र के

पिता सत्यब्रत आदि का वर्णन किया गया है। अथर्व वेद में जिन परमब्रह्म की स्तुति की गयी है वह ऋषभदेव को छोड़कर और कोई नही है।

सराक जाति का तो इस प्रकार का कोई लिखित इतिहास नहीं है जिससे यह जाति इस बात का प्रमाण दे सके कि हम ऋषभदेव के ही वंशज है। अगर लिखित इतिहास था भी तो दैविक विपदाओं से नष्ट हो गया। दैविक आपदायों से अपने वंश के परिचय को बचाने के लिये प्राचीन काल से ही लोगों द्वारा कुछ उपाय किये गये हैं, जैसेः - भारत के कुछ प्रान्त के लोग अपने नाम के साथ अपने कुल देवता का नाम जोड़ देते हैं अपने वंश के परिचय को वंशानुक्रम से वहन करने के लिये। उसी प्रकार यह सराक जाति अपने आदिपुरुष भगवान ऋषभदेव का नाम गोत्र के रुप में वहन करते आ रहे है। किसी भी अनुष्ठान में सराक जाति अपना आदिपुरुष का नाम गोत्रपिता के रूप में स्मरण करती है। देशमें जितनी जातियां है उसमें सिर्फ सराक जाति का ही गोत्र २४ तीर्थंकरों में से ही है। इसमें मुख्यतः ऋषभदेव या आदिदेव, शान्तिनाथ, धर्म देव आदि गोत्रवाले ही ज्यादे है। उसमें भी आधे से ज्यादे लोगों का गोत्र है ऋषभदेव या आदि देव। इसलिये निःसन्देह यह कहा जा सकता है कि सराकों के आदिपुरुष ऋषभदेव या आदिदेव ही हैं।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही यह सराक जाति अपने पूर्वज या गोत्रपिता का नाम गोत्र के रूप में वहन करती आ रही है। यह नाम लिखित इतिहास से भी ज्यादा प्रमाण दे रहा है कि सराक जाति के आदिपुरुष भगवान ऋषभदेव ही है। मानव जाति जिस महापुरुष के नेतृत्व में परिचालित हुई है, दीक्षित हुई है या उनसे खून का रिश्ता है, उसे ही गोत्र पिता माना जाता है। एवं इस गोत्र परिचय द्वारा ही अपने नजदीकी लोगों को पहचानने में समर्थ होते है। इसी कारण आज तीन सौ वर्ष पहले बिछुड़े हुए सराक भाईको पहचानने में वर्तमान जैन समाज समर्थ हुआ है।

श्रीमदभागवत से हमें यह भी पता चलता है कि भगवान ऋषभदेव के सौ पुत्र में ८१ पुत्र ब्राह्मण थे, शेष १९ पुत्र श्रावक धर्म या श्रावक आचार का पालन करने वाले थे। श्रीमद्भागवत के इस कथन से यह भी

पता चलता है कि समाज उस समय दो भाग में बंट चुका था। एक वर्ग के लोग वैदिक धर्म को मानने वाले थे एवं दूसरे वर्ग के लोग श्रावक धर्म को मानने वाले थे।

पूर्व वैदिक युग में समाज के लोग शान्त सदाचारी एवं अहंकारी थे, खान-पान शुद्ध था। उत्तर वैदिक काल के आरम्भ के पहले से ही जनता ने धार्मिक क्रिया काण्ड में अर्थात यज्ञ में पशुबली तथा मन्दिरों के रूप में सोमरस का व्यवहार करना शुरुकर दिया था। सम्भवतः इसी पतन के गड्डे में लुढ़कने के प्रतिरोध के लिये श्रावक धर्म या जैन धर्म अधिक कट्टर बनाया गया था। साथ-साथ एक अलग धर्म या सिद्धान्त के रूप में श्रावक धर्मको प्रतिपादित किया गया था। उसी काल से वंशानुक्रम से यह सराक जाति अपना गोत्र पिता या आदि पुरुष भगवान ऋषभदेव द्वारा प्रदर्शित पथ पर दृढ़ता के साथ चलती आ रही है।

यह सराक जाति ही प्राचीन जैन गोष्ठी है। सराक जाति के जैसी प्राचीन जैन गोष्ठी शायद ही भारत के किसी प्रान्त में निवास कर रही है। भगवान ऋषभ देव के पश्चात् जैन धर्म के २३ तीर्थंकर हुए। अन्तिम तीर्थंकर के पश्चात् अनेको संघ बना अलग-अलग सम्प्रदाय तथा संघों का अलग-अलग अनुशासन आरोपित हुआ मगर सराक जाति शुरु से आजतक भगवान ऋषभदेव द्वारा प्रदर्शित पथ पर ही चलती आ रही है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय तथा अपरिग्रह के सिद्धान्त को अपने जीवन में बरकरार रखते हुए भगवान ऋषभदेव द्वारा प्रदर्शित अनुशासन पर परिचालित होकर यह सराक जाति एक समय ज्ञान-विज्ञान प्रयुक्ति कृषि, वाणिज्य, धातुविद्या, शिल्पकला आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्र में उन्नति के शिखर पर चढ़ी हुई थी। उत्तर भारत में जिस प्रकार बनारस, मथुरा, बृन्दावन को तीर्थ केन्द्र के रूप में तथा अध्यात्मिक केन्द्र के रूप में स्थापित किया गया था। उसी प्रकार सराक लोग सम्मेदशिखर या पार्श्वनाथ को जैन धर्म के आध्यात्मिक केन्द्र के रूप में आबाद किये थे। जैन धर्म के २४ तीर्थंकरों में से २० तीर्थंकर सम्मेदशिखर में ही निर्वाण प्राप्त हुए। यह सम्मेद शिखर प्राचीन काल से ही निर्वाण प्राप्ति का एक प्रेरणा दायी केन्द्र बन गया था।

जैन सम्प्रदाय विशाल भारतीय समाज का ही एक अंश है। वर्तमान युग में प्राचीन भारतीय सभ्यता-संस्कृतियों के अनुसन्धानकारियों ने हमारे अन्दर जो विस्मय पैदा कर दिया है वह इतिहास जैन सम्प्रदाय के इतिहास के बिना अधूरा ही रह जायेंगा। आम जनता की यह धारणा है कि आज से ६०० वर्ष पूर्व भगवान महावीर स्वामी ने ही जैन धर्म का प्रवर्तन किया। मगर जेकव आदि विद्वानों ने अपनी गवेषणा द्वारा इस बात को गलत साबित कर दिया है। जैन लोग जो अपने धर्म को आदि अनन्त काल से चले आना मानते है अनुसंधान कारियों द्वारा वहीं बात सच साबित हुई। इस धर्म का नाम प्राचीन काल में भले ही श्रावक धर्म या अन्य कुछ रहा हो मगर सिद्धान्त तथा आचार-व्यवहार में कोई अन्तर नही था। सम्भवतः वह धर्म श्रावक धर्म के नाम से ही चला आ रहा था और अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म भी एक श्रावक परिवार में ही हुआ था। अपने पिता द्वारा पालन किये जाने वाले श्रावक धर्म के सिद्धान्तों से ही प्रभावित होकर भगवान महावीर ने गृहत्याग कर श्रावक धर्म के सिद्धान्तों का ही प्रचार किया। चार सिद्धान्तों-सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह के साथ सिर्फ अपना एक नया सिद्धान्त व्रह्नचर्य जोड़ दिया। जो कुछ भी हो जैन धर्म या जैन धर्म के सिद्धान्तों को दुनिया का एक प्राचीनतम धर्म माना जाता है एवं भगवान ऋषभदेव को उन सिद्धान्तों के प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है। इसी कारण जैन सम्प्रदाय ऋषभदेव को जैन धर्म का आदिश्वर या पहला तीर्थंकर कहते है और सराक जाति भगवान ऋषभदेव का नाम श्रद्धा के साथ वहन करती आ रही है इसलिये सराक जाति की चर्चा या खोज किये बिना प्राचीन भारतीय सभ्यता संस्कृति का इतिहास भी अधूरा ही रह जायेगा।

जैन दर्शन भारत का एक पुराना दर्शन या विद्या है। भारत की एक लुप्त सभ्यता का अनुसंधान करने पर प्राचीन जैन विद्या का हमें पता चल सकता है तथा इससे भारतवासी काफी उपकृत हो सकते हैं। प्राचीन काल में ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में जो कुछ भी विकास हुआ था उसमें वर्तमान में सराक जाति नाम से परिचित लोगों के पूर्वज श्रावक लोग एक अहम भूमिका निभाये थे। अस्पष्ट कथाओं को छोड़ देने पर भी

अंग्रेजों द्वारा अनुसंधान के क्रम में जो तथ्य सामने आया है उससे निःसन्देह यह कहा जा सकता है कि यह सराक (श्रावक) जाति का प्राचीन इतिहास गौरवपूर्ण था तथा ज्ञान-विज्ञान आदि के क्षेत्र में इस जाति का काफी योगदान था। अग्रेज लोगों द्वारा अनुसंधान के क्रममें बिहार प्रान्त के छोटानागपुर तथा बंगाल के सीमान्तवर्ती क्षेत्र में काफी जैन मूर्तियां तथा अवशेषों के आविष्कार से यह तथ्य सामने आया है कि आज से करीब दो हजार वर्ष पहले इस क्षेत्र में एक उच्चस्तर की सभ्यता का विकास हुआ था जो सभ्यता जैन सिद्धान्तों पर आधारित थी। और भी थोड़ा सा गहराई से विचार करने पर यह तथ्य सामने आ जाता है कि वर्तमान समय में उक्त छोटानागपुर तथा बंगाल के क्षेत्र में निवास करने वाले सराकों के पूर्वजों ने ही उस सभ्यता का विकास किया था। क्योंकि यह सराक जाति जिनके गोत्रपिता भगवान ऋषभदेव है, प्राचीन काल से यहां पर निवास करती आ रही है। श्रावक धर्म को मानने वाले होने के कारण इन्हीं लोगों के द्वारा यहाँ की सभ्यता का विकास हुआ था। लोक गाथा आदि से तथा आचार व्यवहार से भी यह पता चलता है कि यह सराक जाति शुरु से ही श्रावक या जैन आचार को मानने वाली हैं।

प्रारम्भ में भगवान ऋषभदेव को या आदि देव को सारे मनुष्य समाज अपना आदि पुरुष मानते थे इसलिए जैन शास्त्र के साथ-साथ हिन्दू शास्त्र में भी इनकी प्रशंसा एवं स्तुति की गयी है।

वेद तथा पुराण में इन्हें परमात्मा कहकर इनके प्रति भक्ति प्रदर्शन स्तुतियों द्वारा किया गया हैं।

शिवपुराण में इन्हें अर्थात ऋषभदेव को कैलास पर्वत (अष्टापद) का वासी कहा गया है। जैन शास्त्र में भी आदि देव या ऋषभदेव को कैलास पर्वत के वासी कहते हैं। अन्तर इतना ही है कि हिन्दूधर्मावलम्बी हिमालय पर्वत को कैलास पर्वत कहते हैं तथा जैन लोग भगवान ऋषभदेव के निर्वाण स्थल अष्टापद पर्वत को कैलास पर्वत मानते हैं। दोनों सम्प्रदाय आदिनाथ को ही सृष्टि कर्ता मानते हैं तथा आदिनाथ का वाहन बृषभ ही माना जाता है। सम्भवतः कैलास पर्वत को ही अष्टापद कहा गया है।

ब्राह्मण्ड पुराण में कहा गया है कि- माता मरुदेवी ने ऋषभदेव नाम के एक दिव्य कान्तिमान पुत्र को जन्म दिया जो क्षत्रिय कुलका सबसे ज्यादा यशस्वी और महान राजा बना।

स्कन्द पुराण में भगवान ऋषभदेव को, पवित्र, सम्पूर्ण, पूज्य और सर्वोत्तम कहा गया है।

नाग पुराण में कहा गया है कि ६८ तीर्थों की यात्राओं में जो फल मिलता है, आदिनाथ प्रभू का नाम स्मरण करने से ही वह फल मिलता है।

अग्निपुराण में कहा गया है कि ऋषभदेव ने माता मरुदेवी के गर्भ से जन्म ग्रहण किया और इन्हीं के पुत्र भरत के नाम से इस देश का नाम भारत पड़ा।

मनुस्मृति में इन्हें महान संत और देवों का पूज्य कहा गया है। पहले जैन तीर्थंकर ऋषभदेव को ही इस युग का पहला नियम कानून बनाने वाला व्यक्ति भी मनुस्मृति में कहा गया है।

बौद्धधर्म के न्यायबिन्दु ग्रन्थ और तमिल भाषा के वेद में श्री ऋषभदेव को सर्वज्ञ परमात्मा कहा गया है।

उपरिउक्त बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रारम्भिक काल में दोनों सम्प्रदाय अर्थात सारा समाज आदिनाथ या ऋषभनाथ को ही अपना आदि भगवान मानता था तथा सारा समाज का आचार व्यवहार एक ही प्रकार का था। युग के प्रभाव से लोगों को स्वेच्छिक जीवन यापन करना पसन्द लगा अर्थात शुद्ध शाकाहारी, अहिंसक बने रहने की प्रवृत्ति दिन-दिन हटती गयी। श्रावक धर्म के सिद्धान्तों के आधार पर नही चलने वाले लोगों के लिये श्रावक धर्म का दरवाजा बन्द हो गया। श्रावक धर्म को नहीं मानने वाले लोग वैदिक धर्मावलम्बी कहे जाने लगे। श्रावक धर्म का रीति रिवाज कट्टर होने के कारण समाज के कम संख्यक लोग ही श्रावक धर्म पर डटे रहे। उस समय के विभाजन द्वारा गठित श्रावक समाज का ही वंशज यह सराक जाति है और निःसंदेह इस जाति के आदि पुरुष आदिदेव या ऋषभदेव है।

सराक जाति का आदि इतिहास

मनुष्य का आविर्भाव इस दुनियामें कितने वर्ष पूर्व हुआ इसका कोई सटीक विवरण हमारे पास नहीं है। अलग-अलग धर्म शास्त्र का अलग-अलग मत है। मगर सभी धर्म शास्त्र किसी न किसी रूप में यह मानते हैं कि मनुष्य की सृष्टि प्रकृति द्वारा ही की गयी। वैज्ञानिकों का मत कुछ अलग है। चार्लस डारविन के सिद्धान्तों के अनुसार मनुष्य की उत्पत्ति क्रम परिवर्तन द्वारा हुई है। इस सिद्धान्त से अधिकांश लोग सहमत नही हैं। लोगों का कहना है कि अगर मनुष्य या दूसरे जानवरों की उत्पत्ति क्रमपरिवर्तन द्वारा हुई है तो अभी यह पद्धति क्यों रुक गयी और मनुष्य तथा जानवरों की वृद्धि प्रजनन द्वारा क्यों हो रही है।

प्राप्त अवशेषों द्वारा वैज्ञानिकगण इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि मनुष्य की उत्पत्ति इस दुनिया में आज से पांच लाख वर्ष से भी पूर्व समय में हुई थी। वैज्ञानिकों का यह भी मानना है कि सृष्टि की उत्पत्ति के समय मनुष्य जंगल में जानवरों जैसा ही अपना जीवन व्यतीत करता था। मनुष्यों के अन्दर क्रमशः विचार शक्ति का विकास होने पर जानवरों के अन्दर मनुष्य ने श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया तथा सभ्यता की ओर क्रमशः बढ़ने लगा। सभ्यता के इस दौर से गुजरते हुए मनुष्यों ने कई बार सभ्यता का उत्थान पतन देखा। आखिरी सभ्यता सिन्धुघाटी की सभ्यता का पतन ईसा के ५००० वर्ष पूर्व हुआ और आर्य सभ्यता या वैदिक सभ्यता का उदय हुआ। अंग्रेज शासन काल में सिन्धुघाटी से खनन द्वारा जो अवशेष प्राप्त हुए है उसके परीक्षण से यही बात सिद्ध होती है। प्राप्त अवशेष इस बात को प्रमाणित करने में असमर्थ रहे हैं कि उस सभ्यता का निर्माता या वहां पर निवास करने वाले लोग कौन थे। यह एक जटिल और विवाद ग्रस्त प्रश्न है। इन प्रदेशों में जितने भी मनुष्य शरीर के अवशेष मिले है उससे भी इस समस्या का समाधान नही होता। कुछ विद्वान इसे आर्येत्तर सभ्यता तो कुछ विद्वान इसे द्रविड़ सभ्यता कहते है। मगर कोई निश्चित धारणा नही हो पायी है। लेकिन यह बात सभी विद्वानों को स्वीकार है कि विभिन्न प्रदेशों के मनुष्य यहां पर आकर रहते थे तथा उन्हीं के सम्मिलित

प्रचेष्टा एवं प्रयत्न से ही यह सभ्यता विकसित हुई थी। कुछ भी हो, इस सभ्यता के ध्वंस होने के पश्चात ही आर्य सभ्यता का विकास आज से ३००० वर्ष पूर्व हुआ है। सैन्धव या सिन्धु सभ्यता का विकास काल इससे भी दो हजार वर्ष पूर्व है। कुछ विद्वानों ने सिन्धु घाटी की सभ्यता को ही मानव सभ्यता का केन्द्र माना है।

सिन्धु घाटी से प्राप्त अवशेषों में ढाल, कवच, शिरस्त्रान या सैन्य संगठन से सम्बन्धित कोई भी वस्तु प्राप्त नहीं हुई है। इससे यह अन्दाज लगाया जा सकता है कि लोग शान्तिप्रिय थे और शान्तिमय जीवन व्यतीत करते थे। वह सभ्यता लोकतान्त्रिक रही होगी। यह भी अन्दाज लगाया जा सकता है कि युद्ध वर्जन चुक्ति द्वारा लोग युद्ध विग्रह को खत्म कर आपसी विचार विमर्श द्वारा सभी समस्याओं को सुलझा कर शान्ति से दिन बिताते थे अर्थात जैन सिद्धान्तों को मानते थे।

जैन शास्त्रों के अनुसार लाखों-करोड़ों वर्ष पहले इस दुनिया में मनुष्य का अविर्भाव होने की बात कही गयी है। जैन शास्त्रों के अनुसार जैनों के पहले तीर्थंकर तथा सराक जाति के गोत्र पिता ऋषभदेव या आदिदेव का जन्म सृष्टि के प्रारम्भ में हुआ। जैनों के २४वें तीर्थंकर महावीर स्वामी से करोड़ों वर्ष पूर्व भगवान आदिदेव का जन्म अयोध्या नगरी में हुआ था। अयोध्या नगरी उस समय विनीता नाम से जानी जाती थी। जनता के कल्याणार्थ तथा सभ्यता के विकास के लिए ही प्रभु ऋषभदेव ने अपने उपदेशों द्वारा समाज को विकास की ओर अग्रसारित किया। लोगों ने इनको अपना राजा बनाया। जनता के आध्यात्मिक विकास के लिये ऋषभदेव गृहत्याग कर जनता के बीच आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार करने लगे। इसी क्रम में उन्होंने साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका यह चार संघ या चार तीर्थों की स्थापना की। सराक जाति के पूर्वज थे श्रावक लोग और श्रावक शब्द का अपभ्रंश रूप ही सराक हो गया। अतः यह कहना अतिश्योक्ति नही होगी कि श्रावक लोग या सराक लोग भगवान ऋषभदेव के ही कुल के थे या उनके अनुयायी थे तभी तो उनका नाम आजतक सराक लोग गोत्र-पिता के रूप में वहन करते आ रहे हैं। ऋषभदेव भगवान को सराक लोगों का या सराक जाति का गोत्र-पिता

होने की पुष्टि हो जाने के साथ-साथ यह भी पुष्टि हो जाती है कि सराक या श्रावक जाति के पूर्वजों का आदि निवास स्थान अयोध्या के आस-पास ही था तभी तो वे लोग ऋषभदेव के अनुयायी बने थे। शास्त्र में उल्लेख है कि ऋषभदेव के सौ पुत्रों में १९ पुत्र श्रावक थे और ८१ पुत्र ब्राह्मण थे। इसलिये यह भी कहा जा सकता है कि जितने श्रावक थे वो लोग ऋषभदेव के ही १९ पुत्रों के वंशज थे। इसके अलावा सराक जाति के अन्दर जिन-जिन तीर्थंकरों को गोत्र के रूप में माना जाता है उन सभी का जन्म अयोध्या वाराणसी, रत्नपुर, हस्तिनापुर आदि स्थान में ही हुआ था। अतः यह अनुमान लगाना गलत नहीं होगा कि सराकों के आदि पुरुषों का निवास मध्य भारत में अयोध्या के आस-पास ही कहीं रहा होगा।

ऋग्वेद से यह प्रमाण मिलता है कि संस्कृत भाषा-भाषी सभी आर्यों का आचार-आचरण एक प्रकार का नहीं था। इन आर्यों के एक या एक से अधिक कबीले (Clan) थे जिनके आचार, आचरण तथा धर्म अलग थे। ये लोग सम्भवतः गंगा के किनारे-किनारे आगे बढ़ते हुए भारत के पूर्वांचल में अर्थात बिहार प्रान्त (वर्तमान) की सीमा तक विस्तार किये थे। अनुमानतः यही लोग ऋषभदेव या आदिदेव भगवान के (पहले तीर्थंकर) श्रावक धर्म को मानने वाले श्रावक लोग थे। इन लोगों के आगमन के पश्चात् ही पूर्वांचल में वैदिक आर्यों का आगमन हुआ था। पूर्व क्षेत्र के प्राचीन या आदिम आदिवासी द्रविड़ और कोल लोग थे जो लोग अनार्य थे। उनलोगों के साथ अवैदिक तथा वैदिक दोनों आर्यों से काफी संघर्ष चला था।

अथर्व वेद के अनुसार आबादी बढ़ने के कारण श्रावक या सराकों के पूर्वजों ने क्रमशः आगे बढ़कर सरजूनदी के तट पर गाजीपुर, वाराणसी आदि विभिन्न स्थानों में अपना निवास कायम किया। इस भ्रमण काल में अपने कबीले को अनुशासित रखने के लिये एक सरदार या नेता होता था। यह नेता अपने कबीलें के सदस्यों को हर प्रकार की बाधा विपत्ति या क्षति से राहत दिलाता था। क्षति से बचाने के कारण दल के सदस्यों ने इन्हें क्षत्रिय नाम से अख्यायित किया। सराक ज़ाति के पूर्वज भी इसी लिये क्षत्रिय कहलाये और उन्हीं क्षत्रिय का वंशज होने के

कारण सराक जाति भी क्षत्रिय कहलाती थी। मगर दुःख की बात यह है कि १६०० शताब्दी के पश्चात् जैन सराक जाति ब्राह्मणों के प्राधान्य वाले क्षेत्र मानूभूम, बाँकुड़ा, वर्द्धमान, राँची आदि स्थानों में आकर नया निवास स्थापन करने के लिए वाध्य हुए। तब ब्राह्मणों ने सराक जाति के लोगों को शूद्र की श्रेणी में रखा और सराक जाति ब्राह्मणों को अपना पुरोहित के रूप में ग्रहण करने के लिए विवश हुई। इसका कारण यहीं था कि ब्राह्मण लोग जैन धर्म के प्रति पहले से इर्षाणित थे तथा हिन्दू स्थान से जैन धर्म को समाप्त कर देना ही उनलोगों का लक्ष्य था।

वर्तमान युग के लेखकगण या कविगण अपना लेख या लोकगाथा में सराकों का आदि निवास स्थान विभिन्न जगह को चिह्नित करते हैं। जैसे बंगाल के एक कवि मकुन्दराम ने बंगला काव्य चण्डी मंगल में निम्नलिखित गाथा द्वारा सराकों का आदि निवास गुजरात बताया है। वह इस प्रकार हैः-

सराक वईसे गुजराते, जीव जन्तु नही काटे,
सर्व स्थाने तारा निरामिष,

अर्थात सराक जाति के पूर्वज गुजरात के रहने वाले थे। यह जाति निरामिष भोजी है। एवं हर क्षेत्र में अहिंसा प्रेमी है। किसी जीव की हत्या नहीं करते थे। सराक जाति के आदि निवास का अन्दाज भले ही कवि ने गलत किया हो मगर आचार व्यवहार के बारे में उन्होंने सच ही लिखा है कि सराक जाति निरामिष भोजी तथा अहिंसक है।

कवि मुकुन्दराम ने जिस समय इस काव्य की रचना की थी उस समय देश में यातायात का साधन कम था इस लिए बाहर के लोगों का बंगाल में आगमन कम ही हुआ था। मुगल शासन काल में कुछ मारवाड़ी तथा गुजराती व्यवसाईयों का ही आगमन बंगाल में हुआ था जो लोग पूर्ण रूप से निरामिष भोजी तथा अहिंसक थे। कुछ जैनों का भी आगमन हुआ था। दूसरी तरफ बंगाल में रहने वाले अधिकांश लोग आमिष भोजी थे। नवागत गुजराती तथा जैनों के आचार व्यवहार के अनुरूप सराकों का आचार व्यवहार देखकर मुकुन्द राम बाबू के मन में उपरोक्त बात पैदा होना कोई अस्वाभाविक नहीं है कि सराकों का आदि निवास गुजरात

था। उन्होंने यह भी सुन रखा था कि गुजरात में चमार तथा मुसलमानों को छोड़कर कोई आमिषभोजी नहीं है। इस पर उनकी धारणा और भी मजबूत हो गयी कि ये सराक जाति की सभ्यता-संस्कृति गुजरातिओं के जैसी है अतः इन लोगों का आदि निवास बंगाल-बिहार या कोई दूसरा प्रान्त नही हो सकता था गुजरात को छोड़कर।

क्रमशः

मलयासुन्दरी चरित्र

पुर्वानुवृत्ति

रात्रि में भी गौर से उसके चेहरे को देखने से कुमार को मालूम हो गया कि चंद्रावती के राजमहल में देखी हुई मलयासुन्दरी की आकृति है। यह देख कुमार के आश्चर्य का पार न रहा। परोपकार की भावना के उपरान्त हृदयगत प्रेम की प्रेरणा से अब वह अधिक प्रयत्न से उसे होश में लाने का प्रयत्न करने लगा। जब वह थोड़ी होश में आयी तो महाबल द्वारा याद कराये हुए इस श्लोक को बोलने लगी-

विधत्ते यद्विधिस्तत्स्यान्न स्यात् हृदयचिंतितं

इत्यादि वाक्य सुनते ही कुमार को पूर्ण निश्चय हो गया कि वह राजकुमारी ही है। अतः उसने गद् गद् स्वर से कहा - मृगाक्षी! निद्राका त्याग करो स्वस्थ बनो। तुम्हारी यह अवस्था देख कर मेरा हृदय व्याकुल हो रहा है। महाबल का शब्द सुनते ही नेत्र खोल राजकुमारी उसके सामने देखने लगी। अपने पास बैठा हुये और अपने शरीर की सुश्रुषा करते हुये राजकुमार को देख उस दुःख में भी उसका हृदय हर्ष से भर आया। ऐसी दुःखी अवस्था में कुमार का दर्शन कर वह अपने तमाम दुःखों को भूल गई। शरीर को संकोच कर और वस्त्र समेट कर बैठ गयी और स्निग्ध दृष्टि से कुमार की ओर एकटक देखने लगी।

मलया - राजकुमार ! यह क्या मैं स्वप्न देख रही हूँ? मैं किस तरह जीवित रही और आप अकस्मात् यहां कैसे आ गये।?

महाबल - राजकुमारी ! यह बात मैं तुम्हें फिर सुनाऊंगा। पहले नजदीक में जो नदी मालूम होती है वहां चल कर जो तुम्हारा शरीर मैल और अजगर की लार से भरा हुआ है इसे साफ करना चाहिये।

मलया-जैसी आपकी आज्ञा। वहां से उठ कर दोनों जनें पास में बहने वाली नदी पर गये, वहां जाकर राजकुमारी के शरीर को साफ किया। वस्त्र धोये और उसे स्वच्छ ताजा पानी पिलाकर महाबल कुमार

अपने साथ लेकर वापिस उसी आम के पेड़ तले आ बैठा।

मलया - (जरा स्वस्थ होकर) राजकुमार! आप यहां कैसे आये? महाबल अपना तमाम वृतान्त व्यन्तर देवी के हरण से लेकर उस अजगर के चीर डालने तक कह सुनाया। वह वृतान्त सुनकर मलयासुन्दरी कुमार के धैर्य और साहस से चकित हो बारम्बार मस्तक हिलाने लगी। कुमार की ओर स्नेह भरी दृष्टि से देखते हुये वह बोल उठी कुमार! आपने बड़ा कष्ट सहन किया।

महाबल - सुन्दरी ! तुम अब मुझे अपना वृत्तान्त कह सुनाओ। मेरे गये बाद तुम पर क्या क्या घटनायें घटी? इस भयानक अजगर के उदर में किस तरह आ पड़ी? अनेक सुभटों से सुरक्षित उस राजमहल में रहने वाली तुम्हें इस अजगर ने किस तरह सटका?

मलया सुन्दरी अपना वृत्तान्त कहना ही चाहती थी कि इतने ही में महाबल के कान पर दूर से आते हुए किसी मनुष्य की आहट पड़ी। महाबल तुरन्त ही सावधान होकर विचारने लगा। रात्रि के समय ऐसे प्रदेश में यह कौन फिर रहा होगा? संभव है मुझ अकेले को स्त्री के पास बैठा देख वह कुछ उपद्रव करे। अगर राजकुमारी की खोज में ही कोई आ रहा है तो इस समय इसे अकेली मेरे पास बैठी देख वह कुछ आपत्ति करेगा।

पूर्वोक्त विचार कर कुमार ने अपने केशपाश में से एक गुटिका निकाली और उसे उसी आम के रस में घिसकर कुमारी के मस्तक पर तिलक कर दिया। उस गुटिका के प्रभाव से मलयासुन्दरी का पुरुष रूप देख महाबल बोला - राजकुमारी! जब तक तुम्हारे मस्तक पर किया हुआ यह तिलक मेरे थूक से न मिटा दिया जाय तब तक तुम्हारा यह रूप ऐसा ही कायम रहेगा। अभी रात्रि बहुत है। उन्मार्ग से कोई सामने मनुष्य चला आ रहा मालूम होता है। जब तक उसका भलीं भाँति पता न लग जाय, और अब से जो आगे ऐसे प्रसंग आयँगे उनमें तुम्हारा ऐसा ही रूप बनाने की आवश्यकता है।

मलया - राजकुमार! आप को जैसे उचित मालूम हो वैसा करें। मैंने तो यह शरीर जन्मपर्यंत आपको समर्पण कर दिया है।

महाबल - तुम्हारा कहना सही है, परन्तु इस समय हमें बिलकुल मौन रहना चाहिये। देखो, वह व्यक्ति नजदीक ही आ रहा है। तुम्हें यह बताये देता हूँ कि वह मनुष्य चाहे जो हो परन्तु तुम्हें सर्वथा निर्भीक रहना चाहिये। इस प्रकार राजकुमारी को धैर्य देकर महाबल सामने से आने वाले व्यक्ति की ओर देखने लगा। देखते ही देखते वह व्यक्ति शीघ्र गति से बिलकुल नजदीक आ पहुँचा। नजदीक आने से कुमार को यह मालूम हो गया कि सामने आने वाला व्यक्ति पुरुष नहीं किन्तु भय से कांपती हुई एक युवती स्त्री है। उसे नजदीक आई देख कुमार ने मीठी आवाज से कहा -

भद्रे! तू कौन है? ऐसी घोर अन्धेरी रात्री में इस निर्जन जंगल में तुझे अकेली आने का क्या कारण हुआ? तेरा शरीर किस भय से काँप रहा है? यहाँ से नजदीक में कौन सा शहर है और वहां पर कौन राज्य करता है? हम दोनों परदेशी हैं। रास्ते ही में रात पड़ जाने से हमने यहां ही विश्राम कर लिया है, परन्तु हम इस प्रदेश से सर्वथा अनजान हैं इस तरह कुमार ने उसे मीठे वचनों द्वारा कुछ आश्वासन सा दिया।

कुमार के वचनों पर विश्वास रख कर आगन्तुक स्त्री बोली - हे क्षत्रिय पुत्रों! मैं आप के पूछे हुए प्रश्नों का उत्तर देती हूँ।

आप जहां पर बैठे हैं यह गोला नदी के किनारे का प्रदेश है। यहां से बिल्कुल नजदीक चंद्रावती नाम की नगरी है। जहाँ पर वीरधवल राजा राज्य करता है। आगन्तुक स्त्री के मुख से यह समाचार सुनकर महाबल का ह्रदय हर्ष और आश्चर्य से पूर्ण हो गया। वह सोचने लगा, भाग्य की कैसी विचित्र गति है? ऐसे संकट में पड़कर भी मैं अपने इष्ट स्थान के समीप ही आ पहुँचा हूँ। मृत्यु के मुख में गई हुई राजकुमारी भी मुझे जीवित ही मिल गई। ऐसे मरणान्त संकटों में भी मेरा भाग्य मुझे पूर्ण सहायता दे रही है, इसलिये मुझे संकट पूर्ण समय में जरा भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिये।

महाबल - भद्रे! क्या इस राजा के वहां कुछ नई घटना घटी है?

आगन्तुक युवती - हां इस राजा की एक मलयासुन्दरी नामकी विवाह लायक कन्या था, उसके लिये राजा ने स्वयंवर शुरू किया है।

देश देशान्तर से राजकुमारों को बुलाने के वास्ते चारों तरफ राजदूत भेजे हुए हैं। आज से तीसरे दिन, याने चतुर्दशी के रोज स्वयंवर का मूहूर्त था, और राजा ने स्वयंवर की तमाम सामग्री तैयार करली थी परन्तु उस कुमारी की सौतेली माता कनकवती ने उस रंग में भंग कर डाला। मैं उस कनकवती रानी की सोमा नाम की मुख्य दासी हूँ। उसकी पूर्ण विश्वाश पात्र होने से उसका कोई भी कार्य मुझसे छिपा हुआ नहीं है। कनकवती मलयासुन्दरी पर निरन्तर द्वेष रखती थी और उसके छिद्र देखती रहती थी।

मलयासुन्दरी - सोमा! कनकवती किसलिये राजकुमारी पर द्वेष रखती थी?

महाबल - इसमें क्या पूछना है? सौतन को स्वाभाविक ही अपनी सौतन की संतान पर द्वेष होता है।

सोमा - कुछ भी हो, मुझे इस बात का पता नहीं। हां इतना मैं कह सकती हूँ कि राजकुमारी का आज तक कुछ अपराध नहीं देखा गया। उस निर्दोष बालिका के पीछे पड़ने पर भी कनकवती कुमारी का कुछ भी न कर सकी। कल रात का ही जिक्र है मैं और मेरी स्वामिनी सिर्फ हम दोनों ही महल में बैठी थीं। अकस्मात् रानी कनकवती की गोद में कुमारी का लक्ष्मीपुंज हार आ पड़ा। चित्त को आनन्द देने वाला लक्ष्मीपुंज हार का नाम सुनते ही नवचैतन्यसा प्राप्त कर कुमार सहसा बोल उठा - सोमा! वह हार उसकी गोद में कहां से आ पड़ा था?

सोमा - वह हार आकाश मार्ग से पड़ा था। उसे देखकर हम दोनों ने नीचे ऊँचे चारों तरफ देखा परन्तु उस हार को फेकने वाले का कुछ भी पता न लगा। कुमार ने मनही मन सोचा - उसी व्यन्तरी देवी ने मेरे पास से ले जाकर लक्ष्मीपुंजहार वहां डाला होगा, जिसने उस के साथ मेरी अन्य वस्तुयें भी चुराई हैं। मालुम होता है उस व्यन्तरी देवी का कनकवती के साथ कुछ जन्मान्तर का स्नेह संबन्ध होगा। इसी से उसने वह हार उसे जाकर दिया होगा। अहा! जिस हार का अब तक भी कहीं पता न लगा, जिसके लिये मैं संकट में पड़ा हूँ स्वप्न में भी कल्पना नहीं होती थी कि हार कहां होगा उसी हार का पता अनायास ही मिल गया-

महाबल - सोमा! वह हार लेकर कनकवती ने क्या किया? इस वक्त वह हार कहां पर है?

सोमा - हार मिलने से अतिहर्ष प्राप्त कर कनकवती ने मुझ से कहा - भद्रे! देख, यह कैसा अपूर्व आश्चर्य है। जहां पर पुरुष का संचार होना कठिन है ऐसे स्थान में रहने वाली राजकुमारी मलयासुन्दरी का यह हार अकस्मात् मेरी गोद में आ पड़ा है। तू चारों तरफ देख, इस समय कोई मनुष्य महल में छिपकर, यह सब कुछ देख तो नहीं रहा है? मैंने और मेरी स्वामिनी कनकवती ने भी महल में सर्वत्र देखा परन्तु हमें कोई भी मनुष्य देखने में न आया।

कुछ देर मौन रहकर मेरी स्वामिनी ने मुझ से कहा सोमा! तू इस हार की प्राप्ति का जिक्र किसी को भी मत करना। मैंने वह बात शिरोधार्य की। स्वामिनी ने उस हार को कहीं गुप्त स्थान पर छिपा दिया। इसके बाद हम दोनों जने महाराज वीरधबल के पास गई। मेरी स्वामिनी ने हाथ जोड़ कर महाराज से प्रार्थना की - महाराज! मैं आप से एकान्त में कुछ आपके हित और लाभ की बात कहना चाहती हूं। महाराज वीरधबल यह सुन बहुत अच्छा कहकर उठ खड़े हुए और मेरी स्वामिनी के साथ एक जुदे कमरे में चले गये।

वहां पर मेरी स्वामिनी ने महाराज से कहा स्वामिन! पृथ्वीस्थानपुर के भूपति सूरपाल राजा का महा पराक्रमी सुन्दर और तेजस्वी महाबल नामक एक कुमार है। उसका एक मनुष्य गुप्त रीति से बहुत दफे आपकी अति प्यारी राजकुमारी मलयासुन्दरी के पास आता है। राज्य का भूषण रूप और दिव्य प्रभाववाला वह लक्ष्मीपूंज हार आज ही कुमारी ने महाबल कुमार के लिये उस आदमी के हाथ भेज दिया है और साथ ही उसे यह भी कहलाया है कि स्वयंवर के बहाने से बहुत सी सेना लेकर तुम इस अवसर पर जरूर आना। अन्य राजकुमार भी इस समय अवश्य आयँगे। आपके संकेत करने पर वे आपको सहायता भी करेंगे। इसलिए इस समय राज्य को ग्रहण करने का यह अमूल्य अवसर है। मेरा विवाह भी आपके ही साथ होगा।

महाराज! सचमुच ही कुमारी सरल स्वभावी है। उसे राज्य लोभी धूर्त और अपने बल से गर्वित महाबल कुमार ने भरमा कर अपने वश में कर लिया है, इसी कारण उसने इस प्रकार का भयंकर राजद्रोह और कुलघातक विचार किया है। प्राणनाथ! स्त्रियों की वाणी मधुर होती है परन्तु उनकी बुद्धि बड़ी तुच्छ होती है। मुख में कुछ, और ह्रदय में कुछ और ही होता है।मूर्ख स्त्रियां तुच्छ लालसा में फँसकर अपने माता पिता, भाई आदि समस्त कुटुम्ब को भयानक कष्ट में डाल देती हैं, इसी कारण यह गुप्त रहस्य मैंने आपके सामने निवेदन किया है। अब आपको जो उचित मालूम हो सो करें। यदि आपको मेरे वचनों पर विश्वास न हो तो आप इस समय कुमारी के पास से हार मांगें, जो उसने आपको हार दे दिया तो उस दिन के समान आप मुझे सदा के लिए झूँठी और ईर्षालू ही समझिये अन्यथा मेरा कथन सत्य समझ कर आप अपने और नष्ट होते राज्य को बचाने का उपाय करें। इत्यादि अनेक असत्य वचनों से राजा को ऐसा भ्रम में डाल दिया कि क्रोधावेश में आकर राजा ने तत्काल ही सबको वहां से विसर्जन किया और कुमारी की माता चंपकमाला को बुलाकर राजा ने रानी कनकवती से सुनी हुई तमाम बातें कहीं, परन्तु चंपक माला को उन बातों पर बिलकुल विश्वास न आया। जब राजा ने हार के विषय में सुनाया तो रानी ने यह बात मंजूर करली कि हां यदि हार उसके पास न मिले तो इन बातों पर विश्वास करने में कोई दिक्कत नहीं है। रानी का अभिप्राय प्राप्त कर राजा ने उसी वक्त राजकुमारी को बुलवाया और उसके पास से लक्ष्मीपुंज हार मांगा। पहले तो कुमारी से कुछ भी उत्तर न बन सका, परन्तु वह कुछ सोच कर बोली, पिताजी! उस हार को मेरे पास से किसी ने चुरा लिया मालूम होता है। कई रोज से ढूँढने पर भी वह नहीं मिलता।

यह उत्तर सुनते ही मारे क्रोध के राजा के नेत्र लाल सुर्ख हो गये होठ फड़कने लगे वह तिरस्कार पूर्वक जोर से बोल उठा - पापिनी! मेरे सामने से दूर चली जा मुझे अपना मुँह न दिखा तेरे रचे हुए प्रंपचों का मुझे सब पता लग गया है।

इधर रानी चंपकमाला भी तिरस्कार कर उसे फटकारने लगी। माता सहित पिता को क्रोधातुर देखकर मलयासुन्दरी तुरन्त ही लौटकर अपने महल में आगई।

उसका मुख कमल चिन्ता की छाया से मुरझा गया। वह सोचने लगी - माता पिता को इतना क्रोध करने का क्या कारण होगा? मैंने मन वचन और शरीर से आज तक कभी भी प्यारे माता पिता से अनिष्ट आचरण नहीं किया। मेरे हाथ से भारी से भारी कीमती वस्तु नष्ट होने पर भी पिताजी ने मुझ पर कभी क्रोध नहीं किया। आज यह क्या हुआ? माता पिता दोनों ही कोपायमान हो रहे हैं? उनके इस असत्य कोप का क्या कारण है यह मालूम नहीं होता । न जाने अब इस भयानक क्रोध का क्या परिणाम उपस्थित होगा? इसी सोच विचार में वह ह्रदय से कांपती हुई मानसिक वेदना सहन करती हुई अपने कमरे में बैठ गई।

राजा ने चंपकमाला से कहा देवी! इस दुष्ट ह्रदय वाली कुमारी ने सचमुच ही लक्ष्मीपुंज हार महाबल को दे दिया है। कनकवती का कथन असत्य नही; स्वयंवर में आने वाले अनेक राजकुमारों से यह दुष्ट लड़की मुझे मरवा डालेगी। हमने इसे कितना लाड़ लड़ाया? इसके स्वयंवर के लिये कितना महान् खर्च करके मंडप तैयार किया है, यह पुत्री के रूप में जन्म लेने वाली हमारी कोई पूर्व जन्म की दुश्मन है। सचमुच ही अनुरागिनी स्त्री मनुष्य को मृत्यु से बचाती है और विरक्ता स्त्री मनुष्य को मृत्यु के द्वार पर पहुँचाती है। मित्र को शत्रु और शत्रु को मित्र बना देती है, इसलिये हे प्रिये! मेरा यह विचार है कि जब तक वे दुश्मन राजकुंमार यहाँ पर न आ पहुँचें तब तक इस दुष्ट कुमारी को यमराज के हवाले कर देना चाहिये। रानी ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। अनेक विचारों में उलझ कर रानी के साथ राजा ने कष्ट से रात बिताई। प्रातःकाल होते ही राजा ने कोतवाल को बुलाकर आज्ञा दी कि इस मेरी पापिष्ठा कुमारी मलयासुन्दरी को यहां से दूर ले जाकर जान से मार डालो। इस विषय में मुझ से बारंबार पूछने या विचार करने की तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं।

इस बात की खबर होते ही बुद्धिनिधान सुबुद्धि नामक प्रधान मंत्री शीघ्र ही महाराजा के पास आया। क्रोध से विकृत बने हुए राजा को देखकर प्रधान मंत्री नमस्कार कर नम्रता पूर्वक बोला - महाराज! ऐसा असमंजस और भयानक कार्य करने का क्या कारण है? इस समय कुमारी मलयासुन्दरी आपकी वही पुत्री नहीं जिसके विनयादि गुणों की आप सदैव प्रशंसा किया करते थे? क्या अब उसके ऊपर का वात्सल्य आप में नहीं रहा? इस भोली भाली राजकुमारी ने प्राण दंड पाने का ऐसा क्या अपराध कर डाला? महाराज! जो कार्य करने हो उसे दीर्घ दृष्टि से पूर्व पर विचार करके करना चाहिये। अविचारित किये हुए कार्य का परिणाम किसी किसी समय मरणान्त कष्ट से भी अधिक दुःसह होता है।

राजा - प्रधान ! तुम्हारा कथन बिलकुल ठीक है; परन्तु मैं अविचारित कार्य नहीं कर रहा हूँ। बाहर से भोली दीखने वाली इस कुमारी ने भयंकर अपराध किया है । इसने हमारे वंश को सर्वथा नष्ट करने का प्रपंच रचा है। आज हमें इसकी प्रपच्चलीला का पता लगा हैं। राजा ने कनकवती द्वारा सुना हुआ वृत्तान्त मंत्री को कह सुनाया। यह सुनकर मंत्री भी भयभीत हो मौन धारण कर कुछ विचारों में पड़ गया। इस का निर्णय करने में उसकी बुद्धि न चली।

राजा की आज्ञा पाकर दो चार सिपाहियों को साथ में लेकर कोतवाल राजकुमारी के महल में आ पहुँचा और मन्द स्वर से मलयासुन्दरी से बोला - राजकुमारी ! महाराज तुम पर अत्यन्त क्रोधित हुए हैं। इस कारण उन्होंने तुम को मार डालने की आज्ञा फर्माई है। हा! पराधीन हतभाग्य मैं इस समय क्या करूं? कोतवाल की बात सुनकर मलयासुन्दरी के नेत्रों से आँसुओं की झड़ी लग गई। उसके चेहरे पर दीनता छा गई और अब मुझे क्या करना चाहिए बस इस विचार में वह मूढ़ बन गई। रूँधे हुए कंठ से कुमारी ने उत्तर दिया - कोतवाल! पिता जी का मुझ पर इस भयंकर क्रोधका कारण तुम जानते हो? कोतवाल बोला - राजकुमारी मैं इस घटना के रहस्य को बिलकुल नहीं जानता।

मलयासुन्दरी दुःख से अस्थिर चित्त की आस्था में होकर बोलने लगी - "पिताजी! निर्दोष बालिका पर निष्कारण ऐसा प्राण घातक कोप किस लिये ? प्यारे पिता! अनेक भूलें होने पर भी आज पर्यन्त आपसे ऐसा अविचारित कार्य कभी नहीं हुआ। आज आप को क्या किसी ने भरमा दिया है? इस समय मेरे प्रति आपका असीम प्रेम कहाँ चला गया? माता चंपकमाला! आप भी पत्थर के समान कठोर ह्रदय बनाकर निस्नेहा हो गई! यदि आप को मुझ से कुछ अपराध ही हुआ मालूम होता है, तो क्या माता पिता सन्तान के एक अपराध को क्षमा नहीं कर सकते? मुझपर असीम प्रेम रखने वाले हे भ्राता मलयकेतु! क्या ऐसे समय तुम भी मौन धारण किये बैठे हो! इस विषमता का क्या कारण है? इस पर भी मुझे नहीं बतलाया जाता कि मैंने ऐसा कौनसा भयंकर अपराध किया है जिससे आज तमाम परिवार का मुझ से प्रेम नष्ट हो गया? मैं जानती हूं कि आज मेरा पुण्य सर्वथा नाश हो चुका है। इसी से प्राणों से प्यारी समझने वाला सारा राजकुल आज मुझे दुश्मन समझ कर निष्ठुर बन गया है।

पूर्वोक्त विचारों की धुन में उसने यह निश्चय किया कि एक दफे मैं पिताजी से प्रार्थना करूँ, वे मुझे मेरा अपराध मालूम करावें। फिर जो मेरे भाग्य में होगा सो होगा। यह सोचकर उसने वेगवती को बुला कर अपना सारा अभिप्राय कह सुनाया और अपनी तरफ से प्रार्थना करने के लिए उसे राजा के पास भेजा।

वेगवती महाराज वीरधवल के पास आकर हाथ जोड़ नम्रता पूर्वक बिज्ञप्ति करने लगी "महाराज मलयासुन्दरी मेरी मार्फत आप से हाथ जोड़ कर नम्र प्रार्थना करती है कि कृपा कर मुझे यह जनावें कि मुझ हतभागनी से आपका क्या अपराध हुआ है? यदि मुझे मृत्यु से पहले अपना अपराध मालूम होगा तो मेरे चित्त को संतोष होगा। मैं समझूंगी कि पिता जी ने मुझे मेरे ही अपराध की शिक्षा दी है। आपकी दी हुई प्राणदण्ड की शिक्षा मुझे शिरोधार्द है, परन्तु प्राण त्याग से पहले यदि आप की आज्ञा हो तो अन्तिम समय एक दफे आप के और माताजी के दर्शन करना चाहती हूँ। अगर यह बात आपको बिलकुल मंजूर न हो तो मैं दूर रही हुई आपको तथा माता चंपकमाला और सौतेली माता कनकवती को अन्तिम नमस्कार करती हूँ।

राजा- "पापिष्टा लड़की! अयोग्य कार्य करके भी मुझ से अपराध जानना चाहती है? मुझे मालूम न था कि तू ऊपर से भोली देख पड़ती हुई भी भीतर से इतनी गूढ़ हृदय और कपट प्रवीण है। मैं अन्दर से विषतुल्य और ऊपर से अमृत के समान उसके मीठा बचन सुनना नहीं चाहता। मैं अब उस दुष्टा का मुंह देखना नहीं चाहता और न तो मुझे उसके इस कपट पूर्ण नमस्कार की आवश्यकता है। जिस तरह कोतवाल कहे उस तरह वह अपने प्राणों को त्याग दे।

राजा के अन्तिम वचन सुनकर वेगवती के दुःख का पार न रहा। उसका हृदय भर आया। आंखों से आंसू बहाने लगी परन्तु अन्त में धीरज धारण कर उसने मलयासुन्दरी का महाराज को अन्तिम संदेश सुनाया। महाराज! अगर आप का यही अन्तिम निश्चय है तो मलयासुन्दरी गोला नदी के किनारे पर जो पाताल कूप नामक अन्धकार पूर्ण गहरा कुंआ है उसमें झंपा पात कर मृत्यु का शरण लेगी। इतनी बात कह कर और राजा का उत्तर सुनने की भी प्रतिज्ञा न करके बेगवती वहां से तत्काल ही वापिस लौट गई, और मलयासुन्दरी के पास जाकर उसने सविस्तार तमाम हकीकत कह सुनाई।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta-700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,Resi; 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta-700 020
Ph: 247-6874,Resi: 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta -700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box: 16127, Cal-17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph: (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (R) 218-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram: Sudera

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H.M.T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Calcutta - 700 007
Phone: 239 7607

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Ph: 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Ph: 236-3028, 237-4039

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Ph: (O) 244-1309, (R) 475-7458

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Ph: Shop -227-1857 (R) 238-0026

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph: 282-4649, Resi: 247-2670

MANI DHARITAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P. V. C. Insulated Wires and Cables.
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph:(O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile: 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178,25778,25779
Fax: 05414-25378 (U. P.) 0151-61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Ph: 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Ph: 2477450/5264

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Ph: Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile: 98 3102 8566
Resi: 355-9641/7196

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi: 464-2783

APRAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
Email : Suravee @cal2. vsnl. net in
sona @ cal3. vsnl. net in

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta - 700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta - 69
Ph: 248-1533,248-0046

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Ph: 476-1533

MOTILAL BENGANI CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Ph: 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M. D. DND, M. R. C. O. G. (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Ph: 474-8008

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta - 700068
Ph: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1, M. G. Road, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950
(Fact).557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Ph: 2353902/2759
Fax: 033-2353902

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-5146/6941, Mobile: 9830032021
Fax: 91 (33)2420588

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph: 238-7281, 230-1739

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Ph: (O) 348 8576/0669/1242
Resi: 225 5514, 237 8208, 229 1783

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI
CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Ph: 239 6205/9727

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-4730/6256/9867, Direct: 248-6477/6169
Resi: 478-0765/458-3397, Mobile: 98300-30618
Fax: 248-6169

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Ph: 2352076, 2355701

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013
Ph: 244-4436

R. K. KOTHARI
N. I. Corporation
Photographic, Heavy & Fine Chemicals
44c, Indian Mirror Street, Calcutta-700 013
Phone: 245-5763/64/65
D: 245-5766, Fax: 91-33-2446148

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

A. K. CHHAJER
Chhajer & Company
Chartered Accountants
230 A Masjid Moth
South Extension Part-II
New Delhi-110049

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला
१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़
कलकत्ता - ७०० ०७१

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य
प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीसी पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे
भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी
कलकत्ता

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of puming stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in places where Columbus would have feared to tread)

Subhash Projects and Marketing Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITHNATURE

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Calcutta 700016 Ph:(033)245 7562. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi 110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011)684 6003. Regional Office:8/2 Lisoor Road, Bangalore 560 042, Ph: (080)559 5508-15, Fax: (080) 559 5580.

Laying pipelines across one of the nation s driest regions, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreshwar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of paradip

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

BOTHRA SHIPPING SERVICES

2, CLIVE GHAT STREET,
(N. C. DUTTA SARANI)
2ND FLOOR, ROOM NO. 10,
CALCUTTA - 700 001
Fax No. 220-6400
Phone: 220-7162
Email : sccbss @ cal2. vsnl. net in

Steamer Agents, Handling Agents, Commission Agents & Transport Contractors

शास्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta - 700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone: 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 6346441/6446442
Fax: 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं।
Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta, 700 017
Telegram: 'Hindogen' Calcutta
Phone: (033) 242-8399/8330/5443

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
Iron Ore and Manganese Ore Mines
In Orissa

S.G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayaputi, Phase-1, New Delhi-110064
Phone: 5144496,5131086,5132203
Fax: 91-011-5131184
E-mail: Laxman. jariwala @ gems. vsnl. net. in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।"

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin-742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No. : 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'STHE ONLYTRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPEDTO MANUFACTURE 132 KV CLASSTRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English:

1. Bhagavati-sutra-Taxt edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:
   - Vol - 1 (satakas 1-2) Price : Rs. 150.00
   - Vol - 2 (satakas 3-6) 150.00
   - Vol - 3 (satakas 7-8) 150.00
   - Vol -4 (satakas 9-11) 150.00
2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Calcutta; 1977. pp. x+82 with 45 plates Price : Rs. 100.00 (It is the glorification of the sacred mountain Satrunaya.}
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, Price : Rs. 15.00
5. Lalwani and S.R. Benerjee - Weber's Sacred Literature of the Jains Price : Rs. 100.00

Hindi

6. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumar Begani Price Rs. 40.00
7. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti ki Kavita. translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 20.00
8. Ganesh Lalwani - Nilanjana translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 30.00
9. Ganesh Lalwani - Candana-Murti translated by Shrimati Rajkumari Begani. Price: Rs. 50.00
10. Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira Price: Rs. 60.00
11. Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Rat, Price: Rs. 45.00
12. Ganesh Lalwani Pancadasi. Price: Rs. 100.00
13. Rajkumari Begani-Yado ke Aine me. Price: Rs. 30.00

Bengali:

14. Ganesh Lalwani-Atimukta, Price: Rs. 40.00
15. Ganesh Lalwani-Sraman Samskrti Kavita. Price:Rs. 20.00
16. Puran Chand Shyamsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma. Price.Rs. 15.00
17. Satya Ranjan Bandyopadhyay-Prasnottare Jaina-dharma Price:Rs. 20.00

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है

एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर

काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/RNP-45
Vol. XXIV No. 4 TITTHAYARA July 2000
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225